कवर चित्र नं. 2 (लक्ष्मी-नारायण):-

आज के समस्याओं भरे युग में मनुष्य को अपने जीवन के लक्ष्य का पता नहीं है। वैज्ञानिक आविष्कारों के चलते मनुष्य ने कल्पनातीत प्रगति की है; लेकिन फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं है। आधुनिक शिक्षा मानव को डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक, नेता या व्यापारी तो बना देती है; किन्तु उसे सच्ची एवं स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति नहीं करा सकती। अल्पकालिक सुख-शान्ति पाने की जल्दबाज़ी में मनुष्य या तो विषय-विकारों में फँस जाता है या फिर भौतिक सुखों से विरक्त होकर संन्यासी बन जाता है; किन्तु सच्ची सुख-शान्ति, न तो विषय-विकारों से और न ही संन्यास से प्राप्त होती है। वह तो केवल गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए, ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इसी सच्ची सुख-शांति एवं पवित्रता से परिपूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री लक्ष्मी और श्री नारायण एवं उनकी दिव्य रचना को ही इस चित्र में चित्रित किया गया है। दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा दिव्य साक्षात्कारों के आधार पर बनवाए गए चार मुख्य चित्रों में यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी शामिल है। इस चित्र में वर्तमान मनुष्य-जीवन के लक्ष्य अर्थात् **'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी'** को चित्रित किया गया है।

Cover Picture No.2
कवर चित्र नं. 2

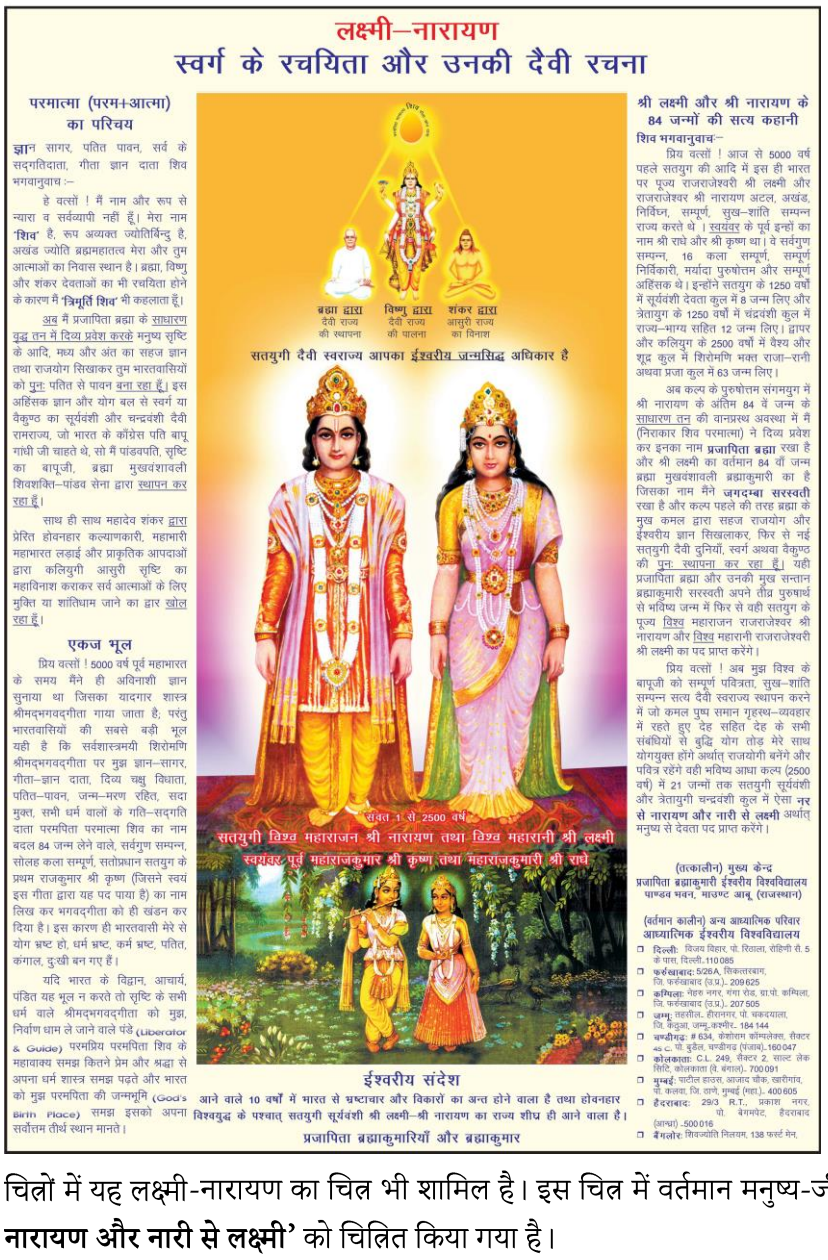

पुरानी दुनिया के विनाश अर्थात् परमपिता+परमात्मा के तीन दिव्य कर्तव्यों के निमित्त बनते हैं। जबकि त्रिमूर्ति के नीचे संगमयुग में लक्ष्मी-नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माओं और सतयुग में उनके दैवी सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले श्री राधे और श्री कृष्ण को चित्रित किया गया है। चित्र के शीर्षक में 'स्वर्ग के रचयिता' से अभिप्राय लक्ष्मी-नारायण है, न कि शिव; क्योंकि संगमयुग पर ज्योतिर्बिन्दु शिव से तो केवल ज्ञान का निराकारी वर्सा मिलता है। संगमयुग में परमपिता+परमात्मा के ज्ञान को सर्वाधिक धारण करने वाली दो सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ श्री लक्ष्मी एवं श्री नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं तथा विनाश के बाद जब सतयुग का आरम्भ होता है तब उनके द्वारा दादा लेखराज ब्रह्मा एवं ओमराधे सरस्वती की आत्माएँ ही श्री कृष्ण एवं श्री राधे के रूप में जन्म लेती हैं।

चित्र के मध्य भाग में लिखा गया है कि **'सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है।'** अर्थात् जिस प्रकार विश्व के मात-पिता संगमयुग पर परमपिता शिव का दिया गया ज्ञान धारण कर नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं, उसी प्रकार हर मनुष्य यह ज्ञान धारण कर इसी जन्म में देवी-देवता बन सकते हैं; लेकिन इस जन्म में देवी-देवता बनने का यह अर्थ नहीं कि हम चित्र में दर्शाए गए लक्ष्मी -नारायण की भाँति आभूषण और वस्त्रादि प्राप्त कर लेंगे। यह आभूषणादि वास्तव में दिव्यगुणों के प्रतीक हैं। चित्र में संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण के चारों ओर जो प्रकाश दिखाया गया है , वह वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान एवं पवित्रता की लाइट है; किन्तु सतयुग में इनके द्वारा जो आत्माएँ राधे-कृष्ण के रूप में जन्म लेंगी, उनके केवल सिर के पीछे लाइट का ताज दिखाया गया है जो कि पवित्रता का सूचक है; क्योंकि विनाश के बाद परमपिता+परमात्मा का दिया गया सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है।

यहाँ एक और बात विचारणीय है कि चित्र में दर्शाए गए संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण विश्व-महारानी व विश्व-महाराजन होंगे; क्योंकि अंततः सारे विश्वधर्मों की आत्माएँ उनको अपना मात -पिता मान लेंगी; किन्तु विनाश के बाद मनुष्यों का संसार केवल भारत तक सीमित रह जाएगा ; क्योंकि अन्य सभी धर्मखण्ड 2500 वर्षों के लिए समुद्र में समा जाएँगे। विनाश के बाद सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले राधे-कृष्ण केवल भारत के 9 लाख देवी-देवताओं के लिए महाराजकुमार व महाराजकुमारी बनेंगे , सारे विश्व के लिए नहीं। हालाँकि यही राधे-कृष्ण बड़े होने पर लक्ष्मी-नारायण का टाइटिल (उपाधि) धारण करेंगे; परंतु वे विश्व-महाराजा या विश्व-महारानी नहीं कहला सकते; क्योंकि विनाश के बाद विश्व की अधिकतर आत्माएँ परमधाम लौट चुकी होंगी। अतः संगमयुगी लक्ष्मी -नारायण ही सच्चे लक्ष्मी-नारायण हैं। इन्हीं सत्यनारायण की कथा आज भी भारत के हर घर में सुनी जाती है, जो झूठी दुनिया के झूठे ज्ञान की बातों से मुकाबला करते हैं।

सतयुग में हर मनुष्य देवी-देवता कहलाएगा तथा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम एवं डबल अहिंसक होगा। जैसा कि चित्र में स्पष्ट है , वहाँ प्रकृति ही हर प्रकार से अपने स्वामी अर्थात् देवी-देवताओं की सेवा करेगी। वहाँ सदैव सदाबहार मौसम होगा। न हिंसक जीव -जन्तुओं का डर होगा, न ही हिंसक मनुष्य का। आत्मा और शरीर, दोनों ही पवित्र, सुन्दर और निरोगी होने के कारण न वहाँ डॉक्टरों की ज़रूरत होगी, न शरीर रूपी वस्त्र को सजाने के लिए किसी बाह्य साधनों की। चित्र में दिखाया गया है कि कृष्ण की दृष्टि राधे पर है और राधे की दृष्टि कृष्ण पर है। यह वास्तव में सतयुग और त्रेतायुग में देवी-देवताओं के बीच अखण्ड एवं अव्यभिचारी प्रेम का प्रतीक है। वर्तमान कलियुगी वातावरण के विपरीत स्वर्ग में अव्यभिचारी प्यार होता है, अनेक देहधारियों से सम्बन्ध नहीं होता। इसकी नींव संगमयुग पर ही पड़ती है , जब देवी-देवता बनने वाली आत्माएँ, ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के बाद, परमपिता से अव्यभिचारी सम्बन्ध जोड़ती हैं। इस चित्र के मध्य में 'ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार' की बात कही गई है अर्थात् परमपिता शिव संगमयुग पर इसी जन्म में हमें देवी-देवता बनाते हैं अर्थात् आत्मा और शरीर दोनों को ही पवित्र बनाते हैं। निकट भविष्य में , इस कलियुगी सृष्टि के विनाश से पूर्व ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग से आत्माएँ तो पवित्र बनेंगी ही; लेकिन विनाश के बाद देवी-देवता

बनने वाले जो मनुष्य बचेंगे, उनके शरीर भी उसी प्रकार कंचन काया वाले बन जाएँगे जिस प्रकार सर्प एक खल छोड़ कर दूसरी खल धारण करता है।

अतः अब जबकि संगमयुग के हीरे तुल्य समय में परमपिता शिव प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि हम भी घर-गृहस्थ में रहते हुए 'नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी' बनने का पुरुषार्थ करें।